

नगर निकायों में बीसी (ए) वर्ग को दिया जाएगा आरक्षण

एक शिक्षण संस्थान का नाम गुरु गोरखनाथ के नाम पर रखा जाएगा, बाबा मस्तनाथ विवि में गुरु गोरखनाथ के नाम पर स्थापित की जाएगी शोध पीठ, नाथ संप्रदाय के लोगों को पुजारी-पुरोहित कल्याण बोर्ड में किया जाएगा शामिल

टीम एक्शन इंडिया/
करनाल/राजकुमार प्रिंस
हरियाणा सरकार की ओर से व
महाभूमी भोजर लाल ने घोषणाओं
को छाड़ी लगाये थे समाज को
कृतार्थ किया। उन्होंने घोषणा करते
हुए कहा कि प्रदेश में एक शिक्षण
संस्थान का नाम गुरु गोरखनाथ के
नाम पर रखा जाएगा। इसके
अलावा, बाबा मस्तनाथ
विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर,
रोहतस और गोरखनाथ के नाम पर
एक पीठ (चैरेक) शाप्ति की
जाएगी, जो उक्ते जीवन और
उनकी शिक्षाओं पर शोध करेगी।
मुख्यमंत्री ने वह भी घोषणा की कि
नाथ संप्रदाय के लोगों को पुजारी-
पुरोहित कल्याण बोर्ड में शामिल
किया जाएगा। मोहर लाल ने कहा
कि राज्य सरकार ने पंचायती राज
संस्थानों में बीसी (ए) वर्ग को
आरक्षण प्रदान किया था। अब नगर
निकायों में भी इसी तर्ज पर बीसी
(ए) वर्ग को आरक्षण प्रदान किया
जाएगा। उन्होंने कहा कि बच्चों को
बाबा गोरखनाथ की शिक्षाओं से
अवगत रहने के लिए एक
गोरखनाथ की जीवनी व उनकी
शिक्षाओं का उल्लेख स्कूली
पाठ्यक्रम में किया जाएगा। उन्होंने
कहा कि पारस्परिक बाद यंत्र बदक,
जो एक आयु के बाद बाबा बींचों को
बजाने में सहायता नहीं रहत, उनके
कल्पना के लिए एक राज्य सरकार
विश्वविद्यालय से विद्यार्थी योजना तैयार
कर रही है, जिसका जटिल ही उन्हें
लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि योगी
समाज की कुरीतियों को दूर करने
में संत-महापुरुषों का अतुलनीय
योगदान: मुख्यमंत्री ने कहा कि
समाज की कुरीतियों को दूर करने में
हमारे संत-महापुरुषों का संदेव
अतुलनीय योगदान रहा है। उनकी



आयुष्मान कार्ड के माध्यम से 7 लाख गरीब लोगों ने मुफ्त में करवाया इलाज : मनोहर लाल

करनाल/राजकुमार प्रिंस

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि हरियाणा सरकार ने प्रदेश में हर वर्ग के हितों को ध्यान में रखते हुए अनेक विकासात्मक परियोजनाएं तथा जनकर्त्ताकारी योजनाएं घोड़ा गई हैं, जिनका प्रदेश की जनता को रीसाथ लाभ मिल रहा है। उन्होंने बताया कि जब से प्रदेश में आयुष्मान कार्ड एवं विद्युत योजना लागू हुई है। इस योजना के लागू होने के लिए लोगों को 5 लाख रुपये का वार्षिक इलाज मिल रहा है। अब तक आयुष्मान कार्ड के माध्यम से 7 लाख लोगों ने मुफ्त में अपना इलाज करवाया है, जिस पर सरकार की 950 करोड़ रुपये की राशि खर्च हुई है।

उन्होंने कहा कि वर्ष 2020 में परिवार

पहान तो परिवार के माध्यम से सर्व करके

गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने

वाले लोगों के 12 लाख 50 हजार नए राशन कार्ड बनाए गए हैं। उन्होंने कहा कि परिवार पहान पर में आई चुटियों को भी जटिल रुप से बोहरा

जटिल गरीबी की जगह बोहरा



संपादकीय

जीवन जीने का धर्म

पूजा और प्रार्थने के बीच बुद्ध की प्रखर चिंतन प्रक्रिया ओझल या सरलीकृत हो जाती है। उनको चिंतन प्रक्रिया केरे वाचिलास की जगह व्यावहारिक समाधान की ओर उन्मुख थी। जीवन की पीड़ियाँ और असंतोषजनक स्थिति उनके विचार-यात्रा का मूल थी।

जन्म-मृत्यु के बंधन कारण हैं जैसे ही थे। पुनर्जनन का वाचिलास की जगह व्यावहारिक समाधान की ओर उन्मुख थी। जीवन की संस्कृति की जीवनकीरण भी होती है। और संस्कृत के अतिरिक्त धर्म-कर्म, विश्वास और जीवन पद्धति की विषयताओं से क्षुब्धि थी। इतिहास में यह वह काल था जब कृष्ण की समुद्धि से नगर जन्म ले रहे थे और व्यापार के माध्यम से भारत से बाहर की

संस्कृति की जीवनकीरण भी मिल रही थी। बा सम्पर्क से वह भी पता चल रहा था कि जीवन समाज की भी होती है। और संस्कृत के

अतिरिक्त धर्म-कर्म भी खाइए बोली जाती है। बढ़ी सामाजिक

गतिविळास के आलोचन में नए किस्म के धर्म की व्याख्यता

महसूस की जाने लायी थी। तरस-तरह के कर्मकांड थे और आगे

चल कर उपनिषद के वेदान्त विषयक विचार के प्रतिपादन में अनादि और अनंत ब्रह्म और उसकी प्राप्ति को जीवन के लक्ष्य के रूप में

प्रतिष्ठित किए जा रहे थे। जीवन परिवर्तनशील के अपरिवर्तनीय उसे

शिव (कलाकारी) के रूप में प्रतिपादित किया गया। संभवतः ब्रह्म

के साथ तात्पर्य के जरिए अपार्ता की प्राप्ति की अवधारणा शिवव

का अधार थी। महात्मा बुद्ध ने हमारे अनुभव जगत की

परिवर्तनशीलता और अनिवार्यता के घोंसले को स्वीकार किया।

इसके साथ ही उन्होंने यह भी लक्ष्य किया कि हमारे सुख-सत्तेप के

क्षण भी असन्न मृत्यु की पृष्ठभूमि में अस्थायी हो जाते हैं। परिवर्तन

में दुःख, कुटुंब और असंतोष भी ख्याल बाहर आ जाते हैं। महात्मा बुद्ध

के विचार में जीवन के तीन लक्षण हैं: उसका अस्थायित्व, संतोष का

असंतोष होगा और वे आपाना नहीं हो सकतीं व्यक्ति उसे स्थायी और

शाश्वत माना गया था। यदि आपाना है जो परिवर्तित नहीं होता जो वह

हमारे जीवन में, जो सतत परिवर्तनशील है, भाग ही नहीं ले सकता

और हमें उसका किसी तरह की प्रतीति या अनुभव भी नहीं हो

सकता। अनुभव तो कार्य और कर्म के परिणाम का ही होता है या हो

सकता है जिसका चक्र नियम मिलने तक रहता है और उसका अनुभवी है लिलिप

असंतोष होगा और वे आपाना नहीं हो सकतीं व्यक्ति उसे स्थायी और

शाश्वत माना गया था। यदि आपाना है जो परिवर्तित नहीं होता जो वह

हमारी निरन्तरता (आत्मा की जगह) कर्म में बनी होता है। उपनिषद

के चिंतन में जो स्थायी है अधिक महत्व का और वास्तविक वानी

सत्य है और दूसरी और जो बदलता है वह कमतर सत्य है।

अपरिवर्तनशील आत्मा का अस्तित्व है। बुद्ध इसके विवरित खड़े

होते हैं। कर्म का शब्दावली व्यापार की प्रतीति या अनुभव भी कर्म के

भवित्व में अच्छा या बुरा परिणाम होता है जैसे- किसने खेत में

बीज बोते हैं और बाद में चल कर फसल काढते हैं। बुद्ध के लिए

कर्म भौतिक न था। वह कर्म को उसके पीछे की भावना या मंत्र से

जोड़ते हैं जो नैतिक हो सकती है। पर हम जीवन का

अरम्भ साफ स्लेट से नहीं करत। हम अपने अतीत के कर्मों के दाय

से युक्त होते हैं जो नैतिक या अनैतिक हो सकती है। यदि नैतिक

होता है तो मन शुद्ध होता है।

केदार नाथ सिंह बनाम बिहार राज्य



अशोक भाटिया

“
राजद्रोह के कानून में सरकार के प्रति उत्तेजना या असंतोष को

उत्तेजित करने की बात की गई है।

आखिर असंतोष का क्या अर्थ है?

व्या किसी को यह कहने का

अधिकार नहीं है कि उसे सरकार

से नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे प्रधानमंत्री से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं

कह सकता कि उसे धर्मालोचकों से

नफरत है? व्या कोई यह नहीं</p

